वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 400
ISBN-978-93-82071-86-0

श्री महर्षि विधान

(समवसरण स्थित ऋषिगण विधान)

–लेखिका –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर मुनि महाराज की परम्परा के तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष (पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित)-2013-2014 के समापन अवसर पर आचार्य श्री की 101वीं जन्मजयंती (पौष शु. पूर्णिमा-15 जनवरी 2014) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	पौष शु. पूर्णिमा, 15 जनवरी 2014	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

Our Sacred bookds are our light houses erected in the great sea of time. अर्थात् सद्पुस्तकें वह प्रकाशगृह हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गई हैं। आत्मोन्नति के मार्ग में सुसाहित्य का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। साधक पुरुष के लिए साधना मार्ग में साध्य की ओर बढ़ने के लिए सत्साहित्य एक प्रकृष्ट आलम्बन है। सद्गुरु सर्वत्र उपलब्ध नहीं होते हैं परन्तु सत्साहित्य प्रत्येक मन्दिर, साहित्य सदन एवं स्वाध्याय भवन में उपलब्ध हो जाता है और सत्साहित्य का उपयोग साधक के द्वारा अध्ययन कर उसे अपने जीवन में उतारने पर ही होता है।

आचार्य कुन्दकुन्द, अकलंकदेव, यतिवृषभ आदि दिग्गज और महान आचार्यों ने भी सत्साहित्य की रचना एवं स्वाध्याय में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किय, इसी कारण आज हम श्रद्धा के साथ उनका नाम स्मरण करते हैं। साहित्य लेखन एवं स्वाध्याय में अपने जीवन को व्यतीत करने वाली बीसवीं शताब्दी की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी, 300 ग्रन्थों की रचयित्री, परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का नाम आज देश-विदेशों में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के कारण ही फैलाहै।

जिनकी लेखनी में आगम का प्रतिरूप दर्पणवत् झलकता है, जिन ग्रन्थों के द्वारा बड़े से बड़े विद्वान और छोटे से छोटे अल्पज्ञानी भी सहज ही लाभ प्राप्त करते हैं उन पूज्यनीय माताजी के जीवन के प्रत्येक पहलू पर दृष्टिपात करें तो हम पाएंगे कि उनका प्रत्येक कार्य चाहे वह साहित्य सृजन हो, तीर्थ निर्माण प्रेरणा हो, तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास-जीर्णोद्धार हो, उनके द्वारा प्रेरणा प्राप्त सेमिनार, संगोष्ठी आदि शैक्षणिक कार्यक्रम हों, महोत्सव विधानादि हों या अन्य कुछ, सब अलौकिक और आगमानुकूल हैं एतदर्श पू. माताजी द्वारा लिखित प्रत्येक कृति का 'वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला' से प्रकाशन कर हम गौरव का अनुभव करते हैं।

उसी क्रम में पूज्य माताजी द्वारा लिखित इस नूतन विधान के द्वारा आप सभी भक्ति गंगा में अवगाहन कर अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने की ओर अग्रसर हों यही शुभेच्छा है और यही इस कृति के प्रकाशन की सार्थकता है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जिनागम में अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु को पंच परमेष्ठी की संज्ञा प्रदान की गई हैं जो परम—उत्कृष्ट पद में स्थित हों वे परमेष्ठी कहलाते हैं।

46 गुण सहित, 18 दोषरहित, चार घातिया कर्मों को नष्ट करने वाले अर्हंत परमेष्ठी हैं। जिन्होंने आठों कर्मों को नष्ट कर दिया और सिद्धालय पर विराजमान हो गए वे सिद्ध परमेष्ठी हैं। 36 मूलगुणों से सहित, शिष्यों का संग्रह–निग्रह कर उन्हें शिक्षा–दीक्षा प्रदान करने वाले आचार्य परमेष्ठी हैं। 25 मूलगुण से सहित, 11 अंग और 14 पूर्व के ज्ञाता, सर्व शास्त्रों में पारंगत, संघ में साधुओं को पढ़ाने वाले उपाध्याय परमेष्ठी की पदवी से समन्वित हैं और पंचेन्द्रिय विषयों से विरक्त, सर्व आरम्भ–परिग्रह के त्यागी, ज्ञान–ध्यान और तप में अनुरक्त, 28 मूलगुणों से युक्त साधु परमेष्ठी कहलाते हैं।

इन पाँच पदों में से किसी भी पद की प्राप्ति साधु अवस्था धारण किए बिना सम्भव नहीं है। ऐसे साधु परमेष्ठी अब तक अनन्तों हो चुके हैं, हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। जैनागम में वर्णित चतुरनुयोगों में प्रथमानुयोग में इन साधु परमेष्ठी का विस्तृत वर्णन हमें प्राप्त होता है। प्रत्येक तीर्थंकर भगवन्तों के समवसरण में भी सात भेद से युक्त साधु भगवन्त विराजमान रहते हैं, जो इस प्रकार से कहे गए हैं—केवली, विपुलमती, अवधिज्ञानी, पूर्वधर, विक्रियाधारी, शिक्षक एवं वादी। ये सभी अपनी–अपनी विशेषताओं से संयुक्त हैं जिनके बारे में विस्तृत जानकारी हमें ग्रन्थों के आलोढन से ही प्राप्त हो सकती थी क्योंकि आज इस पंचमकाल में न तो तीर्थंकर भगवान ही इस भरतक्षेत्र में हैं और न ही उनके समवसरण, हाँ, मोक्षमार्ग का दिग्दर्शन कराने वाले वे साधु परमेष्ठी अवश्य विराजमान हैं जो ऐसे महान साधुओं के बारे में अपने दिव्य वचनामृत और जिनवाणी के माध्यम से हमें बताकर हम पर महान उपकार कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी के सौभाग्य से उत्तर भारत की आध्यात्मिक ज्योति रूप साक्षात् सरस्वती स्वरूपा, परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हमारे पुण्योदय से हमें प्राप्त हुईं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व से सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित करते हुए 300 ग्रंथों की रचना कर अपूर्व

कीर्तिमान स्थापित किया है। अध्यात्म, सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, भूगोल-खगोल आदि प्रत्येक विषयों की सिद्धहस्त लेखिका पूज्य माताजी ने भक्ति के क्षेत्र में अनेक वृहद् एवं लघु किन्तु आगम का सार रूप, विधानों की रचना कर प्रत्येक करने-कराने व पढ़ने वालों को गहन धर्म तत्त्वों की सहज रूप से जानकारी प्रदान की है, आज भारत के कोने-कोने में उनके द्वारा रचित विधानों से भक्तगण असंख्य कर्मों की निर्जरा करते देखे जाते हैं। आज 79 वर्ष की उम्र में शारीरिक क्षीणता के होने पर भी पूज्य माताजी में बच्चों सी निश्छल मुस्कान व युवाओं सा जोश है तथा आज भी उनकी लेखनी सतत प्रवाहमान है।

इसी क्रम में पूज्य माताजी के द्वारा रचित ''श्री महर्षि विधान'' नामक यह अतिशायी नूतन कृति है जिसमें तीर्थंकर भगवन्तों के समवसरण में स्थित सर्व साधुओं की भक्ति के माध्यम से उनकी वन्दना की गई है। इस पूजा विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण, पुनः चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्ति तथा योगिभक्ति है। विधान के प्रारम्भ में पहली समवसरण पूजा और जयमाला है, द्वितीय समवसरण स्थित सर्व साधु पूजा में चौबीसों तीर्थंकरों के समवसरण में स्थित सातों प्रकार के ऋषियों के कुल 168 अर्घ्य एवं 25 पूर्णार्घ्य हैं पुनश्च साधु परमेष्ठी के गुणों की महिमा जयमाला के माध्यम से बताई है। इस प्रकार स्वयं में महिमाशाली यह विधान प्रत्येक करने-कराने, सुनने और पढ़ने वालों को सम्यग्दर्शन की दृढ़ता में निमित्तभूत बनकर उनके मन में साधु अवस्था की प्राप्ति की भावना जागृत करे तथा ऐसे अमूल्य विधानों की प्रदात्री पूज्य माताजी स्वस्थ एवं चिरायु रहकर भव्यों को इसी प्रकार धर्मामृत वर्षा से अभिसिंचित करती रहें यही शुभेच्छा है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

श्री महर्षि विधान मंडल का नक्शा

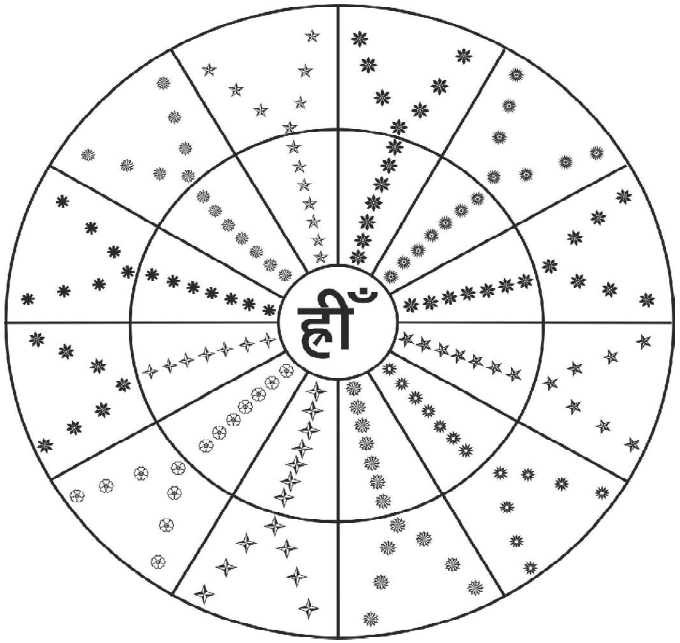

प्रथम कोष्ठक में	–7	अर्घ्य	1	पूर्णार्घ्य
द्वितीय " "	–	"	"	
तृतीय " "	–	"	"	
चतुर्थ " "	–	"	"	
पंचम " "	–	"	"	
छठे " "	–	"	"	
सातवें " "	–	"	"	
आठवें " "	–	"	"	
नवमें " "	–	"	"	
दशवें " "	–	"	"	
ग्यारहवें " "	–	"	"	
बारहवें " "	–	"	"	
तेरहवें " "	–	"	"	
चौदहवें " "	–	"	"	

पन्द्रहवें कोष्ठक में	–7	अर्घ्य	1	पूर्णार्घ्य
सोलहवें " "	–	"	"	
सत्रहवें " "	–	"	"	
अट्ठारहवें " "	–	"	"	
उन्नीसवें " "	–	"	"	
बीसवें " "	–	"	"	
इक्कीसवें " "	–	"	"	
बाइसवें " "	–	"	"	
तेईसवें " "	–	"	"	
चौबीसवें " "	–	"	"	

कुल 168 अर्घ्य और 25 पूर्णार्घ्य हैं।

श्री महर्षि विधान

(समवसरण स्थित ऋषिगण विधान)

मंगलाचरणम्

अर्हंतो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम् ।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलं।।1।।

चतुर्विंशति तीर्थेशा, नित्यं कुर्वन्तु मंगलं।
समवसृतयस्तेषां, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।2।।

समवसृतौ तिष्ठन्ति, तीर्थकृल्लघुनंदनाः।
केवल्याद्याः सप्तविधा, ते मे कुर्वन्तु मंगलम् ।।3।।

तीर्थकृत्सन्निधौ सन्ति, केवलिनः ऋषीश्वराः।
ऋद्धिसिद्धिप्रदातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।4।।

तीर्थंकरसभामध्ये, मनःपर्ययज्ञानिनः।
मनःशुद्धिविधातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।5।।

समवसृतिषु भान्ति, येऽवधिज्ञानियोगिनः।
सीमान्तसुखदातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।6।।

श्रुतकेवलियोगीन्द्राः, अंगपूर्वविशारदाः।
भावश्रुतं प्रयच्छन्तु, नित्यं कुर्वंतु मंगलम्।।7।।

विक्रयर्द्धिमुनीन्द्रा ये, निष्क्रियस्वसुखैषिणः।
सर्वसौख्यप्रदास्ते मे, सदा कुर्वंतु मंगलम्।।8।।

शिक्षका गुरवः सन्ति, मोक्षमार्गस्य दर्शकाः।
ददतु स्वात्मशिक्षां मे, भुवि कुर्वंतु मंगलम्।।9।।

वादिनो यतयो वंद्याः, परवादिजिगीषवः।
स्वपरज्ञानदातारः, ते नः कुर्वंतु मंगलम्।।10।।

श्री महर्षिगणान् नौमि, त्रिसंध्यं भक्तिभावतः।
रत्नत्रयनिधिं लप्स्ये, ते मे कुर्वंतु मंगलम्।।11।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ चतुर्विंशति तीर्थंकरवंदनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं चतुर्विंशतितीर्थंकर भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यह प्रतिज्ञा करके पंचांग नमस्कार करें, पुनः तीन आवर्त एक शिरोनति करके सामायिक दंडक पढ़ें।)

सामायिक दंडक

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि। जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि, ताव कालं पाव कम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करके २७ उच्छ्वास में नव बार णमोकार मंत्र पढ़ें पुनः तीन आवर्त एक शिरोनति करके थोस्सामिस्तव पढ़ें।)

—थोस्सामिस्तव —

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवर लोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो।।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करके पुनः जिस भक्ति के लिए कायोत्सर्ग किया हो, उस भक्ति को पढ़ें।)

चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्तिः

चउवीसं तित्थयरे, उसहाइवीरपच्छिमे वंदे।
सव्वे सगणगणहरे, सिद्धे सिरसा णमंसामि।।१।।
ये लोकेऽष्टसहस्त्रलक्षणधरा, ज्ञेयार्णवान्तर्गता
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोधिकाः।

ये साध्विन्द्रसुराप्सरोगणशतै-र्गीतप्रणुत्यार्चिता-
स्तान् देवान् वृषभादिवीरचरमान्, भक्त्या नमस्याम्यहम्।।२।।
नाभेयं देवपूज्यं, जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपं
सर्वज्ञं संभवाख्यं, मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवं।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं, वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगन्धं
क्षांतं दांतं सुपार्श्वं, सकलशशिनिभं चन्द्रनामानमीडे।।३।।
विख्यातं पुष्पदन्तं, भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं।
श्रेयांसं शीलकोशं, प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम्।
मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं, विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीन्द्रं
धर्मं सद्धर्मकेतुं, शमदमनिलयं स्तौमि शान्तिं शरण्यम् ।।४।।
कुन्थुं सिद्धालयस्थं, श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रं
मल्लिं विख्यातगोत्रं, खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम्।
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं, हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तं
पार्श्वंनागेन्द्रवन्द्यं, शरणमहमितो वर्धमानं च भक्त्या।।५।।

अंचलिका—**इच्छामि भंते! चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेर-सहियाणं चउतीसाति-सयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेविंदमणिमउड-मत्थयमहिदाणं बलदेववासुदेव-चक्कहररिसिमुणिजइअण-गारोवगूढाणं थुइसयसहस्स-णिलयाणं उसहाइवीर-पच्छिममंगल-महापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं।**

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्ति

(पद्यानुवाद)

चौबोल छंद —

वृषभदेव से वीर प्रभू तक, चौबीस तीर्थंकर वंदूँ।
गणयुत सब गणधर देवों को, सिद्धों को शिर से प्रणमूँ।।१।।
जो इस जग में सहस आठ, लक्षणधर ज्ञेयसिंधु के पार।
जो सम्यक् भवजाल हेतु, नाशक रवि शशिप्रभ अधिक अपार।।
जो मुनि इन्द्र देवियों शत से, गीत नमित अर्चित कीर्तित।
उन वृषभादि वीर तक प्रभु को, भक्ती से मैं नमूँ सतत।।२।।
देवपूज्य वृषभेश अजित, जिनवर त्रैलोक्य प्रदीप महान।
संभव जिन सर्वज्ञ मुनीगण, पुंगव अभिनंदन भगवान।।
कर्मशत्रु हन सुमतिनाथ, वर कमल सदृश सुरभित पद्मेश।
श्री सुपार्श्व शमदमयुत शशिवत्, पूर्णचंद्र जिन नमूं हमेश।।३।।
भव भयनाशक पुष्पदंतजिन, प्रथित सु शीतल त्रिभुवन ईश।
शीलकोश श्रेयांस सुपूजित, वासुपूज्य गणधर के ईश।।
इंद्रिय अश्व दमनकृत ऋषिपति, विमल अनंत मुनीश नमूं।
सद्धर्मध्वज धर्मशरणपटु, शमदमगृह शांतीश नमूं।।४।।
सिद्धगृहस्थित कुंथु अरहप्रभु, श्रमणपती साम्राज्य त्यजित।
प्रथितगोत्र मल्लिप्रभ खेचरनुत, सुखराशि सु मुनिसुव्रत।।
सुरपति अर्चित नमिजिन हरिकुल, तिलक नेमि भव अंत किया।
फणिपति वंद्य पार्श्व, भक्तीवश वर्द्धमान तव शरण लिया।।५।।

अंचलिका —

हे भगवन् ! चौबीस भक्ति का, कायोत्सर्ग किया रुचि से।
उसके आलोचन करने की, इच्छा करता हूँ मुद से।।
अष्ट महा प्रातिहार्य सहित जो, पंच महाकल्याणक युत।
चौंतिस अतिशय विशेषयुत, बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित।।
हलधर वासुदेव प्रतिचक्री, ऋषि मुनि यति अनगार सहित।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से, वीरप्रभु तक महापुरुष।।

मंगल महापुरुष तीर्थंकर, उन सबको शुभ भक्ती से।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूं, वंदूं नमूं महारुचि से।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुणसंपति होवे।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ सर्वसाधुवन्दनाक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दना स्तवसमेतं योगिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

सामायिक दंडक

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं — अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा — अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि — अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि। जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि, ताव कालं पाव कम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करके २७ उच्छ्वास में नव बार णमोकार मंत्र पढ़ें पुनः तीन आवर्त एक शिरोनति करके थोस्सामिस्तव पढ़ें।)

—थोस्सामिस्तव —

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवर लोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो।।

प्राकृत योगिभक्ति— पद्यानुवाद

गुणधर अनगारों की तात्त्विक, गुण से स्तुति मैं करता हूँ।
करमुकुलित अंजलि जोड़ विभव, निजयुत अभिवंदन करता हूँ।।३।।

सम्यक्त्वभाव मिथ्यात्वभाव, दो में स्थित दो विध मुनि हैं।
मिथ्यात्व छोड़ इक समकित में, स्थित उन मुनि को वंदन है।।४।।
जो राग द्वेष दो दोष रहित, त्रयदण्ड रहित त्रय शल्य रहित।
त्रय गारवमुक्त साधु उनको, त्रिकरणशुद्धी से वंदन नित।।५।।
चउविध कषाय का मथन करें, चउगति संसार गमन भययुत।
पांचों आस्रव से विरत पांच, इंद्रियविजयी को वंदन नित।।६।।
षट्काय जीव की दयायुक्त, छह अनायतन वर्जित प्रशांत।
सातों भय मुक्त सत्त्व को नित, दें अभयदान मैं नमूं शांत।।७।।
आठों मद शून्य आठ कर्मों, को नाश नष्ट संसार किया।
परमार्थ सर्वकृतकार्य अष्ट-गुण ऋद्धीश्वर को नमन किया।।८।।
नव ब्रह्मचर्य से गुप्त नवों, नय के ज्ञाता को वंदूं मैं।
दशविध धर्मों में रत दशविध, संयमयुत संयत वंदूं मैं।।९।।
श्रुत ग्यारह अंग अब्धि पारग, श्रुत द्वादशांग में निपुण रहें।
द्वादश विध तप में निरत क्रिया, तेरह में आदर नमूं उन्हें।।१०।।
चौदह भूतों में दयायुक्त, चौदह अंतर परिग्रह विमुक्त।
चौदह पूर्वों के ज्ञानी को, वंदूं जो चौदह मल विमुक्त।।११।।
उपवास एक से लेकर छह, महिने तक करते उन्हें नमूं।
दिन आदि अंत रवि के सन्मुख, स्थित तप करते उन्हें नमूं।।१२।।
जो बहुविध प्रतिमायोग तथा, पर्यंक वीरासन आदि धरें।
नहिं थूकें नहिं खुजलावें जो, तन निर्मम उनको नमन करें।।१३।।
स्थित ध्यानी मौनी करते, अभ्रावकाश तरुमूल ध्यान।
शिर दाढ़ी केशलोंच कर तनु, निष्प्रतिकारी उनको प्रणाम।।१४।।
जो जल्लमल्ल से लिप्त गात्र, फिर भी स्वकर्ममलकलुष शुद्ध।
नख दाढ़ी केश बढ़े जिनके, तप लक्ष्मीभृत उन नमूं नित्य।।१५।।
जो ज्ञान नीर अभिषिक्त शीलगुण, भूषित तप से सुरभित हैं।
रागादिरहित श्रुतपूर्ण मोक्षगति, पथनेता को मम नति है।।१६।।
जो उग्र तपस्या दीप्तीतप, तपतप्त महातप घोरतपी।
तप में महंत तप संयम की, ऋद्धीयुत उनको नमूं अभी।।१७।।
आमौषधि क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि, विप्रुष औषधि सर्वौषधि।
तपसिद्धि पांच औषधी ऋद्धि, इन युत मुनि को वंदूं त्रयविध।।१८।।

अमृत मधु दुग्ध व घी स्रावी, अक्षीण महानस को वंदूं।
मनबली वचनबलि कायबली, मैं त्रिविध सभी मुनि को वंदूं।।१९।।
वर कोष्ठ बीज बुद्धी, पद अनुसारी संभिन्न श्रोतृ ऋद्धी।
अवग्रह ईहा में समर्थ मुनि, सूत्रार्थ विशारद नमूं सभी।।२०।।
मति श्रुतज्ञानी अवधीज्ञानी, मनपर्ययज्ञानि सर्वज्ञानी।
मैं वंदूं जग प्रद्योतक मुनि, प्रत्यक्ष परोक्ष सभी ज्ञानी।।२१।।
आकाश तंतु जल श्रेणी के, चारण जंघाचरण वंदूं।
विक्रिया ऋद्धियुत विद्याधर, मुनि प्रज्ञाश्रमण उन्हें वंदूं।।२२।।
भू से चतुरंगुल अधर चलें, फल फूलों पर चलते जो यति।
अनुपम तप से महनीय देव, असुरों से वंदित उन्हें नती।।२३।।
भयजित् उपसर्गजयी इंद्रिय, परिषहविजयी मुनि कषायजित्।
जितरागद्वेष जितमोह दुःखसुखजयी उन्हें प्रणमूँ नितप्रति।।२४।।

दोहा

रागद्वेषगत साधु सब, मुझसे स्तुति प्राप्त।
संघ को मुझे समाधि दें, करें दुःख का नाश।।२५।।

अंचलिका (चौबोल छंद)

हे भगवन् ! इस योग भक्ति का, कायोत्सर्ग किया रुचि से।
उसकी आलोचन करने की, इच्छा करता हूँ मुद से।।
ढाई द्वीप अरु दो समुद्र की, पन्द्रह कर्मभूमियों में।
आतापन तरुमूलयोग, अभ्रावकाश से ध्यान धरें।।
मौन करें वीरासन, कुक्कुट, आसन एक पार्श्व सोते।
बेला तेला पक्ष मास उपवास, आदि बहु तप तपते।।
ऐसे सर्व साधुगण की मैं, सदा काल अर्चना करूं।
पूंजूं वंदूं नमस्कार भी, करूं सतत वंदना करूं।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपति होवे।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

पूजा नं.–1

समवसरण पूजा

अथ स्थापना–शंभु छंद

रत्नों के खंभों पर सुस्थित, मुक्तामालाओं से सुंदर।
श्री मंडपभूमि आठवीं है, द्वादशगण रचना से मनहर।।
इनमें जो मुनी आर्यिका हैं, हम उनका वंदन करते हैं।
इन समवसरण युत जिनवर का, आह्वानन कर हम यजते हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–चाल–नंदीश्वर पूजा

यमुना नदि का शुचि नीरं, झारी पूर्ण भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, तुमपद धार करूँ।।
श्री समवसरण जिननाथ, बारह गण धारे।
हो स्वपर भेद विज्ञान, पूजूँ रुचि धारे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे।।श्री.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यःचंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अक्षत लाय, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज अक्षत पद को पाय, यहाँ न आऊँ मैं।।

श्री मंडप भूमि महान्, बारह गण धारे।
हो स्वपर भेद विज्ञान, पूजूँ रुचि धारे।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊँ।
अर्पूं जिनवर चरणाब्ज, निजसुख यश पाऊँ।।श्री.।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊँ।
हो क्षुधा वेदना दूर, अर्पत सुख पाऊँ।।श्री.।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोह तिमिर हर ज्योति, ज्ञान उद्योत करे।।श्री.।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेऊँ अगनी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में।।श्री.।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली।।श्री.।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ बनाय, उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊँ सिद्ध शिला।।श्री.।।९।।

ॐ श्रीसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपदधार करंत।
तिहुंजग में मुझमें सदा, करो शांति भगवंत।।१०।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंधि कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितवृषभादिवर्द्धमानान्तेभ्यो नमः।

(१०८ बार सुगन्धित पुष्प या लवंग से जाप्य करना)

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय तीर्थंकर समवसरणवर घातिकर्म का नाश किया।
नव केवल लब्धी, निज उपलब्धी, पाकर केवलज्ञान लिया।।
तुम समवसरण में, निज दर्पण में, भविजन निजभवदेख रहे।
रत्नत्रय पाकर, मोह हटाकर, मुनि बनकर शिवपंथ गहे।।१।।

–स्रग्विणी छंद–

पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
मोह पर से छुटे ध्यान हो आपना।।
श्री समोसर्ण में आठवीं भूमि में।
सोलहों भित्ति से कोष्ठ बारह बने।।पूरिये.।।२।।

सामने कोष्ठ में गणधरा मुनिवरा।
नाथ ध्वनि सुन रहें जो महासुख करा।।पूरिये.।।३।।

दूसरे कोष्ठ में कल्प[१] की देवियाँ।
तीसरे आर्यिका श्राविकायें वहां।।पूरिये.।।४।।

ज्योतिषी व्यंतरी फिर भवनवासियाँ[२]।
भौन सुर व्यंतरा ज्योतिषी सुर[३] वहां।।पूरिये.।।५।।

ये सभी क्रम से फिर देव हैं स्वर्ग के।
ग्यारमें चक्रवर्ती मनुज बैठते।।पूरिये.।।६।।

बारवें सिंह हरिणादि हैं प्रेम से।
इस तरह बारहों गण सभा नेम से।।पूरिये.।।७।।

देव देवी असंख्यों वहां बैठते।
नर पशु सर्व बाधा बिना तिष्ठते।।पूरिये.।।८।।

नाथ की दिव्यध्वनि तीन संध्या खिरे।
एक योजन तके सब सुने रुचि धरे।।पूरिये.।।९।।

वहां समोसर्ण में रोग शोकादि ना।
भूख प्यासादि बाधा जनममृत्यु ना।।पूरिये.।।१०।।

वैर उत्पात आतंक भीती नहीं।
सर्वथा हर्ष ही हर्ष सुख की मही।।पूरिये.।।११।।

धन्य मैं धन्य मैं अर्चना कर रहा।
धन्य ये जन्म मेरा सफल हो रहा।।पूरिये.।।१२।।

आत्म पीयूष निर्झर पिऊँ प्रेम से।
स्वात्मसिद्धि मिले ज्ञानमति पूर्ण से।।पूरिये.।।१३।।

ॐ ह्रीं समवसरणविभूतिधारकश्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

तीर्थंकर प्रभु के समवसरण के, महर्षिगण को वंदन है।
उनकी भक्ती मंगलकारी, वे जिनवर के लघुनंदन हैं।।
जो श्री महर्षि विधान को, गुरुवर भक्ती से करते हैं।
''सज्ज्ञानमती'' रत्नत्रय निधि, ले शीघ्र भवोदधि तिरते हैं।।१।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.–2

श्री महर्षि पूजा

समवसरणस्थित ऋषिगण पूजा

–अथ स्थापना–गीता छंद–

जो महर्षि तीर्थेश समवसृति में सदा ही तिष्ठते।
वे सात भेदों में रहें निज मुक्तिकांता प्रीति तें।।
केवलि विपुलमति, अवधिज्ञानी, पूर्वधर ऋषिवर वहां।
विक्रियधरा, शिक्षक व वादी मैं उन्हें पूजूं यहां।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–नाराच छंद

साधु चित्त के समान स्वच्छ नीर लाइये।
साधु चर्ण धार देय पाप पंक क्षालिये।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।१।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कांति के समान पीत गंध लाइये।
साधु चर्ण चर्चते समस्त ताप नाशिये।।प्राकृतीक.।।२।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्ररश्मि के समान धौतशालि लाइये।
चर्ण के समीप पुंज देत सौख्य पाइये।।प्राकृतीक.।।३।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुगंधि पुष्प थाल में भरे।
कामदेव के जयी मुनीन्द्र पाद में धरें।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।४।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरिका इमर्तियाँ सुवर्ण थाल में भरे।
भूख व्याधि नाश हेतु आप अर्चना करें।।प्राकृतीक.।।५।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वहा।

रत्नदीप में कपूर ज्योति को जलाइये।
साधुवृंद पूजते सुज्ञान ज्योति पाइये।।प्राकृतीक.।।६।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

अष्ट गंध अति सुगंध धूप खेय अग्नि में।
अष्ट कर्म भस्म होत आप भक्ति रंग में।।प्राकृतीक.।।७।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

सेव आम संतरा बदाम थाल में भरें।
पूजते ही आप चर्ण मुक्ति अंगना वरें।।प्राकृतीक.।।८।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

नीर गंध आदि से सुवर्ण पुष्प मेलिया।
सुख अनंत हेतु आप पाद में समर्पिया।।प्राकृतीक.।।९।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

–दोहा–

गुरुपद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

द्विविध मोक्षपथ मूल, अट्ठाइस हैं मूलगुण।
साध करें अनुकूल, अतः साधु कहलावते।।१।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(१)

चाल–वंदों दिगम्बर गुरुचरण.....

पुरुदेव के ऋषि केवली हैं बीस सहस प्रमाण।
इन भक्ति नौका जो चढ़ें वे लहें पद निर्वाण।।
इन भक्ति से ही भव्य जन, निज लहें ज्ञान अखीर[1]।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य विंशतिसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विपुलमति बारह सहस अरु, सात शतक पचास।
ये मनःपर्यय ज्ञान से, नित करें भुवन प्रकाश।।इन.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य पंचाशदधिकद्वादशहस्रसप्तशतविपुलमतिज्ञानि-ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव के ऋषि अवधिज्ञानी, नौ हजार प्रमाण।
इन पूजते भव व्याधि का हो, शीघ्र ही अवसान[2]।।इन.।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य नवसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषभ जिनके पूर्वधर, सब पूर्व ज्ञानी ख्यात।
उन कही संख्या चार सहस सु सात सौ पच्चास।।इन.।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथतीर्थंकरस्य पंचाशदधिकचतुःसहस्रसप्तशत-पूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधारक मुनि वहाँ छह शतक बीस हजार।
वे भव्यजन को तृप्त करते तरणतारणहार।।

1. अनंत ज्ञान। 2. अंत।

इन भक्ति से ही भव्य जन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य विंशतिसहस्रषट्शतकविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीऋषभ के शिक्षक मुनी इक शतक चार हजार।
पुनरपि पचास गिने गये, इनसे खुले शिव द्वार।।इन.।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य पंचाशदधिकचतुःसहस्रएकशतशिक्षक–ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनी बारह सहस अरु सात शतक पचास।
ये वाद करने में कुशल नित करें धर्म प्रकाश।।इन.।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य पंचाशदधिकद्वादशहस्रसप्तशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

समवसरण में ऋषभ के, ऋषि चौरासि हजार।
नमूँ नमूँ मैं अर्घ ले, जजूँ खुले शिव द्वार।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य चतुरशीतिसहस्रऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(२)

मुनि केवली श्री अजित के सब कहें बीस हजार।
मैं सप्त परमस्थान हेतू नमूँ शत शत बार।।इन.।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य विंशतिसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विपुलमति मनपर्ययी, करते जगत उद्योत।
बारह हजार सु चार सौ पच्चास, शिवसुख स्त्रोत।।इन.।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य पंचाशदधिकद्वादशसहस्रचतुःशतविपुलमति-ज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अवधिज्ञानी नव सहस अरु चार सौ विख्यात।
सर्वावधी धारें महामुनि मैं नमूँ नत माथ।।
इन भक्ति से ही भव्य जन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य नवसहस्रचतु:शतअविधज्ञानिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजित जिनके समवसृति में पूर्वधर मुनि ख्यात।
वे तीन सहस व सात सौ पच्चास हैं कुशलात।।इन.।।११।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य पंचाशदधिकत्रिसहस्रसप्तशतपूर्वधरऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विक्रियाधर चार सौ अरु कहे बीस हजार।
वे आत्मरस अमृत पियें करते स्वपर उपकार।।इन.।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य विंशतिसहस्रचतु:शतविक्रियाधारिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनी इक्किस सहस छह सौ जगत सुखकार।
निज साम्यरस पीयूष पीते, नाथ भक्ति अपार।।इन.।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य एकविंशतिसहस्रषट्शतशिक्षकऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज समय ज्ञानी पर समय के वाद में विख्यात।
बाहर हजार सु चार सौ उन वंदते सुखसात।।इन.।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य द्वादशसहस्रचतु:शतवादिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

अजितनाथ के पास में, एक लाख ऋषि संत।
वंदूँ पूजूँ भाव से, निज सुख सुधा पिबंत।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य सर्वएकलक्षऋषिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलि:।

(३)

ऋषि केवली पंद्रह सहस रहते समवसृति मध्य।
उनको नमूँ वे भक्तगण को दे रहें सुखनव्य।।
इन भक्ति से ही भव्य जन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य पंचदशसहस्रकेवलिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विपुलमति मनपर्ययी नरलोक सब जानंत।
बारह हजार सु एक सौ पच्चास गुणमणिवंत।।इन.।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य पंचाशदधिकद्वादशसहस्रएकशतविपुलमति-ज्ञानिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अवधिज्ञानी नौ सहस छह सौ कहें जगमान्य।
उनके नमन से भव्यजन भी बनें सुर नर मान्य।।इन.।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य नवसहस्रषट्शतअवधिज्ञानिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेश्वर समवसृति में, पूर्वधर मुनिनाथ।
इक्कीस शतक पचास हैं, मैं नमूँ नाय सुमाथ।।।इन.।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य पंचाशदधिकद्विसहस्रएकशतपूर्वधरऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रिय धरें मुनि आठ सौ माने उनीस हजार।
जो वंदते गुरु चरण उनको मिले सौख्य हजार।।इन.।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य एकोनविंशतिसहस्रअष्टशतविक्रियाधारिऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक लाख उनतिस सहस शिक्षक तीन सौ परिमाण।
नित भव्यजन को देय शिक्षा करें भवि कल्याण।।इन.।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य एकलक्षएकोनत्रिंशत्सहस्रत्रयशतशिक्षकऋषिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनी बारह सहस निज पर समय का ज्ञान।
परवादियों का मानमर्दन करें समकितवान।।
इन भक्ति से ही भव्य जन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।२१।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य द्वादशसहस्रवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

संभव जिनके पास में, ऋषि रहते दो लाख।
गुरूभक्ति से नित्य मैं, नमूँ जोड़ जुग हाथ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य सर्वद्वयलक्षऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(४)

ऋषिकेवली वहँ राजते सोलह हजार प्रमाण।
उन वंदना से भव्यजन करते स्व पर पहिचान।।इन.।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य षोडशसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विपुलमति राजे वहाँ मनपर्ययी गुणखान।
इक्कीस सहस सु छह शतक पच्चास सब सुखदान।।इन.।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य एकविंशतिसहस्रषट्शतपंचाशत्विपुलमति-ज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अवधिज्ञानी नव हजार सु आठ सौ गुणखान।
उन ज्ञान में सब मूर्त वस्तू दिख रही अमलान।।इन.।।२४।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य नवसहस्रअष्टशत्अवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश अभिनंदन समवसृति में ऋषीगण मान्य।
मुनि पूर्वधर पच्चीस सौ संपूर्ण श्रुत की खान।।इन.।।२५।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य द्विसहस्रपंचशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहां विक्रियाऋद्धी मुनी उन्नीस सहस महान्।
वे भक्तगण के रोग शोक विपत्ति हरण प्रधान।।
इन भक्ति से ही भव्य जन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।२६।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य एकोनविंशतिसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनी दो लाख तीस हजार और पचास।
जो करें वर्णरसादिविरहित स्वात्मतत्त्व विकास।।इन.।।२७।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य द्विलक्षत्रिंशत्सहस्रपंचाशत्शिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनी इक सहस माने वाद में परवीण।
जो सर्वजन की आधि व्याधी करें क्षण में क्षीण।।इन.।।२८।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य एकसहस्रवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

अभिनंदन जिनके यहाँ, तीन लाख ऋषिवृंद।
धर्ममूर्ति जिनरूप को नमूँ हरो जग फंद।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य सर्वत्रयलक्षऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(५)

–राग भरतरी-दोहा–

केवलि ऋषि तेरह सहस, मुनि परिषद् निवसंत।
उनके ज्ञानादर्श में, लोक अलोक झलकंत।।
नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरू की कृपाप्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।२९।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य त्रयोदशसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती दश सहस हैं, चार शतक मुनिराज।
चार ज्ञानधारी गुरू, देवें निज साम्राज।।
नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरू की कृपाप्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।३०।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य दशसहस्रचतुःशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि ग्यारह सहस, मूर्तिक सब जानंत।
समवसरण में नाथ के, आतम ध्यान धरंत।।नमूँ.।।३१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य एकादशसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के पास में, रत्नत्रय आधार।
पूर्वधारि चौबीस सौ, पूजूँ सुखदातार।।नमूँ.।।३२।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य द्विसहस्रचतुःशतपूर्वधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह हजार चार सौ, विक्रियधारी साधु।
वर्ण गंध रस स्पर्श से, शून्य स्वात्मरस स्वादु।।नमूँ.।।३३।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य अष्टादशसहस्रचतुःशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोय लाख चौवन सहस, तीन शतक पच्चास।
शिक्षक मुनि गुणनिधि भरें, पूजूँ मन उल्लास।।नमूँ.।।३४।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य द्विलक्षचतुःपंचाशत्सहस्रत्रयशतपंचाशत्-शिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी को जीतने, कुशल विजेता ईश।
दश हजार अरु चार सौ, कहे पचास मुनीश।।नमूँ.।।३५।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य दशसहस्रचतुःशतपंचाशत्वादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

सुमतिनाथ के पास में, तीन लाख ऋषिराज।
बीस हजार कहें सभी, जजूँ सरें सब काज।।
नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरू की कृपाप्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।३५।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथसर्वत्रयलक्षविंशतिसहस्रऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(६)

केवलज्ञानी मानिये, बारह सहस प्रमाण।
पूजत स्वातम निधि मिले, शत शत करूँ प्रणाम।।नमूँ.।।३६।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य द्वादशसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि दस सहस, तीन शतक सुखखान।
जो पूजें उन भक्त के, भरते सर्व निधान।।नमूँ.।।३७।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य दशसहस्रत्रयशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि मुनिव्रत सहित, मानें दश हज्जार।
यथाजात मुद्रा धरें, जजत भक्त भव पार।।नमूँ.।।३८।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य दशसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू के पूर्वधर, त्रयशत दोय हजार।
श्रुतकेवलि ये पूज्यवर, जजत मिले श्रुतसार।।नमूँ.।।३९।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य द्विसहस्रत्रिशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू की सभा में, विक्रियमुनि भवि सूर्य।
सोलह हजार आठ सौ जजत मिले गुणपूर्य।।नमूँ.।।४०।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य षोडशसहस्रअष्टशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनि दो लाख अरु, उनहत्तर हज्जार।
चतुर्गती दुख से करें भव्यों का उद्धार।।
नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरू की कृपाप्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।४१।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य द्विलक्षएकोनसप्ततिसहस्रशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनिगण नव सहस, छह सौ गुणमणि धार।
जजत मिटे चहुंगति भ्रमण, मिले मोक्ष का द्वार।।नमूँ।।४२।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य नवसहस्रषट्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

पद्मप्रभू जिननाथ के, समवसरण में साधु।
तीन लाख मानें तथा, तीस हजार अबाधु।।नमूँ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य त्रयलक्षत्रिंशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(७)

केवलज्ञानी ऋषि वहां, ग्यारह सहस प्रमाण।
उनके केवलज्ञान में प्रतिबिंबित जग जान।।नमूँ।।४३।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य एकादशसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि नव सहस, एक शतक पच्चास।
अद्भुत शशि करते सतत, भवि मन कुमुद विकास।।नमूँ।।४४।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य नवसहस्रएकशतपंचाशत्विपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि मुनिराज हैं, नव हजार परिमाण।
जजत भव्य शिवपथ लहें, करें सर्व कल्याण।।नमूँ।।४५।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य नवसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन पास में, दो हजार अरु तीस।
पूर्वधारि मुनि सर्वश्रुत, पारंगत मुनि ईश।।
नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरू की कृपा प्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।४६।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य द्विसहस्रत्रिंशतपूर्वधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दश हजार त्रेपन शतक, विक्रिय ऋद्धि मुनीश।
भवदधि नौका भक्ति उन, जजूँ नमाकर शीश।।नमूँ।।४७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य दशसहस्रत्रिपंचाशत्शतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनि दो लाख अरु, चव्वालीस हजार।
नौ सौ बीस बखानिये, जजत करुँ भव पार।।नमूँ।।४८।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य द्विलक्षचतुश्चत्वारिंशत्सहस्रनवशतविंशतिशिक्षक-ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनि छह सौ कहे पुनरपि आठ हजार।
चिन्मय चिंतामणि पुरुष, करें हमें भव पार।।।।नमूँ.।।४९।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य अष्टसहस्रषट्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्री सुपार्श्व की सभा में, तीन लाख ऋषिवृंद।
जिनमुद्राधारी गुरू, सुरनर किन्नर वंद्य।।नमूँ.।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य त्रयलक्षसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(८)

केवलज्ञानी ऋषि वहां, अठरह सहस बसंत।
जो उनकी पूजा करें, परमानंद धरंत।।

नमूँ नमूँ मुनिनाथ को, स्वात्म सुधारस लीन।
गुरू की कृपा प्रसाद से, बनूँ स्वात्म आधीन।।५०।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य अष्टादशसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ सहस मुनि विपुलमति, ज्ञान धरें अभिराम।
पूजत ही चिंता टले, मिले स्वात्म विश्राम।।नमूँ.।।५१।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य अष्टसहस्रविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि हैं दो सहस, स्वपर विकासन सूर्य।
भवभव संचित अघ सकल, जजत हुये चकचूर।।नमूँ.।।५२।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य द्विसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाप्रभु जिनराज के, समवसरण में पूज्य।
पूर्वधारि मुनि हैं वहाँ, चार सहस जग पूज्य।।नमूँ.।।५३।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य चतुःसहस्रपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियधारी छह शतक, करें कर्म चकचूर।
उनकी पूजा जो करें, करें मृत्यु को दूर।।नमूँ.।।५४।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य षट्शतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोय लाख अरु दस सहस, चार शतक मुनिराज।
शिक्षक माने हैं वहां, जजत मिले निज राज।।नमूँ.।।५५।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य द्विलक्षदशसहस्रचतुःशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनि जिन पास में, मानें सात हजार।
वंदत ही निजपद मिले, भरें सौख्य भण्डार।।नमूँ.।।५६।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य सप्तसहस्रवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

चंद्रप्रभू की सभा में, दोय लाख ऋषिवृंद।
तथा पचास हजार भी, नमत हरे भवफंद।।नमूँ.।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य द्विलक्षपंचाशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(९)

–भुजंगप्रयात छंद–

ऋषी केवली सब पछत्तर शतक जे।
उन्हीं ज्ञान में सर्व त्रैलोक्य झलके।।
नमूं भक्ति से अर्घ लेके ऋषी को।
मिले स्वात्मपीयूष पूरित नदी जो।।५७।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य सप्तसहस्रपंचशतकेवज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी सात हज्जार अरु पाँच सौ हैं।
नमूँ मैं विपुलमति ज्ञानी गुरू हैं।।नमूं.।।५८।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य सप्तसहस्रपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनीश्री अवधिज्ञानि चौरासि सौ हैं।
उन्हें पूजते सर्व व्याधी नशे हैं।।नमूं.।।५९।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य चतुरशीतिशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू पुष्पदंतेश की जो सभा है।
वहां पूर्वधारी सु पंद्रह शतक हैं।।नमूं.।।६०।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य एकसहस्रपंचशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरें विक्रिया साधु तेरह हजारा।
नमूँ मैं मिले भव समुद्री किनारा।।नमूं.।।६१।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य त्रयोदशसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी एक लक्षा सु पचपन हजारा।
कहे पाँच सौ साधु शिक्षक प्रकारा।।नमूं.।।६२।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य एकलक्षपंचपंचाशत्सहस्रपंचशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवादी मुनी छै सहस छै शतक हैं।
उन्हें शीश नाते सभी सौख्य हो हैं।।नमूं.।।६३।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य षट्सहस्रषट्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

पुष्पदंत जिनराज के, समवसरण में सर्व।
दोय लाख ऋषिगण कहे, नमूं हरूँ दुख सर्व।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य द्विलक्षसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१०)

वहाँ केवली सात हज्जार राजें।
सभी लोक आलोक क्षण में प्रकाशें।।नमूं.।।६४।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य सप्तसहस्रकेवलिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनीश्वर विपुलमति पछत्तर शतक हैं।
सभी इंद्र पूजें भजे भक्तिवश हैं।।नमूं.।।६५।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य सप्तसहस्रपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि साधू बहत्तर शतक हैं।
जजें जो सभी रोग बाधा हरे हैं।।

नमूं भक्ति से अर्घ लेके ऋषी को।
मिले स्वात्मपीयूष पूरित नदी जो।।६६।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य सप्तसहस्रद्विशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी पूर्वधर शीतलेश्वर सभा में।
सु चौदह शतक शीश नाऊँ उन्हें मैं।।नमूं.।।६७।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य चतुर्दशशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविक्रिय धरें साधु बारह हजारा।
जजें पाद पंकज लहें भव किनारा।।नमूं.।।६८।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य द्वादशसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सु शिक्षक सु उनसठ सहस दो शतक हैं।
सदा इंद्र धरणेन्द्र चक्री नमें हैं।।नमूं.।।६९।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य एकोनषष्टिसहस्रद्विशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवादी मुनीश्वर सतावन शतक हैं।
सभी लोक में वंद्य अतिशय धरे हैं।।नमूं.।।७०।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य पंचसहस्रसप्तशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्री शीतल जिनराज के, समवसरण में वंद्य।
एक लाख ऋषिगण कहे, नमूँ नमूँ सुखकंद।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य एकलक्षसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(११)

ऋषी केवली हैं सु पैंसठ शतक ही।
चतुः घातकर्मारि जेता बनें ही।।

नमूं भक्ति से अर्घ लेके ऋषी को।
मिले स्वात्मपीयूष पूरित नदी जो।।७१।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य षट्सहस्रपंचशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमति मनःपर्ययी जो मुनी हैं।
कहे छै हजारा महागुण धनी हैं।।नमूं.।।७२।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य षट्सहस्रविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि साधू कहे छै हजारा।
क्षमा आदि से ये लहें भव किनारा।।नमूं.।।७३।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य षट्सहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे पूर्वधर साधु श्रेयांस प्रभु के।
सु तेरह शतक जीत मुद्रा धरें हैं।।नमूं.।।७४।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य एकसहस्रत्रयशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी विक्रियाधारि ग्यारह हजारा।
यथाजात मुद्रा महाशील धारा।।नमूं.।।७५।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य एकादशसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुशिक्षक मुनी अष्ट चालिस सहस्रा।
द्विशत ये कहे हैं महाव्रत धरित्रा।।नमूं.।।७६।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य अष्टचत्वारिंशद्सहस्रद्विशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे वादकर्ता मुनी पण सहस्रा।
दिगम्बर मुनी ये धरें ध्यान शस्त्रा।।

नमूं भक्ति से अर्घ लेके ऋषी को।
मिले स्वात्मपीयूष पूरित नदी जो।।७७।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य पंचसहस्रवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

श्री श्रेयांस जिनराज के, समवसरण में सिद्ध।
चौरासी हज्जार मुनि, जजत मिले निज रिद्ध।।११।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य चतुरशीतिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।
(१२)

ऋषी केवली हैं वहाँ छै हजारा।
इन्होंने स्वयं पा लिया भव किनारा।।नमूं.।।७८।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य षट्सहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमति मुनी छै सहस मान्य जग में।
नमूँ मैं उन्हें सर्व आपद हरें वे।।नमूं.।।७९।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य षट्सहस्रविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि मुनि पाँच हज्जार चउ सौ।
सभी मूल उत्तर गुणों से सजें जो।।नमूं.।।८०।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य पंचसहस्रचतुःशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू वासुपूज्येश की जो सभा है।
वहाँ पूर्वधर इक सहस दो शतक हैं।।नमूं.।।८१।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य एकसहस्रद्विशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहें विक्रियाधारि हैं दस सहस्रा।
सदा शील संयम गुणों से पवित्रा।।

नमूं भक्ति से अर्घ लेके ऋषी को।
मिले स्वात्मपीयूष पूरित नदी जो।।८२।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य दशसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी एक कम होके चालिस हजारा।
पुनः दो शतक ये हि शिक्षक प्रकारा।।नमूं.।।८३।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य एकोनचत्वारिंशतसहस्रद्विशतशिक्षक ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी वादि ब्यालीस सौ शास्त्र माने।
नमूँ मैं उन्हें स्वात्म संपत्ति पाने।।नमूं.।।८४।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य द्विचत्वारिंशत्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

वासुपूज्य जिननाथ के, समवसरण में वंद्य।
बाहत्तर हज्जार मुनि, यजत हरूँ जगद्वंद।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य द्वासप्ततिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१३)

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।
केवली साधु पचपन शतक मान्य हैं।
पूजते ही लहें भेद विज्ञान हैं।।८५।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य पंचसहस्रपंचशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विपुलमति मनःपर्ययी साधु हैं।
पाँच हज्जार पण सौ निजी स्वादु हैं।।

मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।८६।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य पंचसहस्रपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टचालिस शतक साधु अवधी धरें।
तीन ही ज्ञान से मोह तम परिहरें।।मैं.।।८७।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य अष्टचत्वारिंशत्शतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ के पूर्वधर साधु जो।
पूजहूँ नित्य ग्यारह शतक मान्य वो।।मैं.।।८८।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य एकादशशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधारि नौ सहस साधू कहे।
ये सदा स्वात्म के ध्यान में लीन हैं।मैं.।।८९।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य पंचसहस्रपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु अड़तीस हज्जार औ पाँच सौ।
नाम शिक्षक धरें पूजहूँ भाव सो।।मैं.।।९०।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य अष्टत्रिंशत्सहस्रपंचशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु छत्तीस सौ वाद को जीतते।
जो जजें वो स्वयं मृत्यु को जीतते।।मैं.।।९१।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य षट्त्रिंशत्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

विमलनाथ की सभा में, ऋषि अड़सट्ठ हजार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य अष्टषष्टिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१४)

केवली साधु हैं, पाँच हज्जार जो।
चार घाती हने सौख्य भंडार वो।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।९२।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य पंचसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच हज्जार विपुलामतीधर मुनी।
चार ज्ञानी इन्हीं से बनूँ मैं गुणी।।मैं.।।९३।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य पंचसहस्रविपुलमतिज्ञानधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानी तितालीस सौ जानिये।
मार्दवादी गुणों से भरे मानिये।।मैं.।।९४।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य त्रिचत्वारिंशत्शतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंतेशजी के समोशर्ण में।
पूर्वधर एक हज्जार पूजूँ उन्हें।।मैं.।।९५।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य एकसहस्रपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ हज्जार हैं विक्रियाधर मुनी।
ये सभी मूल उत्तर गुणों के धनी।।मैं.।।९६।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य अष्टसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊन चालिस सहस पाँच सौ मुनिवरा।
नाम शिक्षक धरें पूजहूँ गुण भरा।।मैं.।।९७।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य एकोनचत्वारिंशत्सहस्रपंचशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादि बत्तीस सौ शास्त्र ज्ञानी महा।
धर्म दशविध धरें पूजहूँ मैं यहाँ।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।९८।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य द्वात्रिंशत्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्री अनंत जिनराज के, ऋषि छ्यासष्ट हजार।
नग्न दिगम्बर रूपधर, नमूँ नमूँ शत बार।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य षट्षष्टिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१५)

चार हज्जार औ पाँच सौ केवली।
मृत्यु को भी हरे भक्ति ये एकली।।मैं.।।९९।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य चतुःसहस्रपंचशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हज्जार पण सौ विपुलमति मुनी।
पूजते ही लहूँ स्वात्म संपत् घनी।।मैं.।।१००।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य चतुःसहस्रपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु छत्तीस सौ ज्ञान अवधी धरें।
शुद्ध चारित्र से स्वात्म सिद्धी करें।।मैं.।।१०१।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य षट्त्रिंशत्शतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पूर्वधर नौ शतक धर्म तीर्थेश के।
पूजते ही लहें सौख्य निर्वाण के।।मैं.।।१०२।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य नवशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधर मुनी सात हज्जार हैं।
जो जजें वो बने ऋद्धि भरतार हैं।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।१०३।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य सप्तसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु चालीस हज्जार औ सात सौ।
नाम शिक्षक धरें पूजहूँ चाव सो।।मैं.।।१०४।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य चत्वारिंशत्सहस्रसप्तशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाद जेता मुनी दो सहस आठ सौ।
नग्न मुद्रा धरें पूजहूँ ठाठ सो।।मैं.।।१०५।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य द्विसहस्रअष्टशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

धर्मनाथ के पास में, ऋषि चौंसट्ठ हजार।
धर्म दशों विध पूर्ण हित, जजूँ भक्ति उरधार।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य चतुःषष्टिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१६)

केवली चार हज्जार तिष्ठें वहाँ।
पूजते प्राप्त हो ऋद्धि सिद्धी यहाँ।।मैं.।।१०६।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य चतुःसहस्रकेवलिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हज्जार विपुलामती ज्ञानि हैं।
चार गति दुःख से कर रहे त्राण हैं।।मैं.।।१०७।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य चतुःसहस्रविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन हज्जार हैं ज्ञान अवधी धरें।
जो जजें वे स्वयं स्वात्म पुष्टी करें।।
मैं नमूँ मैं नमूँ हे मुनींद्रा तुम्हें।
तीन ही रत्न का दान दीजे हमें।।१०८।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य त्रयसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति तीर्थेश के पूर्वधर आठ सौ।
चौदहों पूर्वधारी जजूँ भक्ति सो।।मैं.।।१०९।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य अष्टशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधारि छै सहस साधू कहे।
रत्नत्रय को धरें आत्मशुद्धी लहें।।मैं.।।११०।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य षट्सहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकतालीस हज्जार औ आठ सौ।
साधु शिक्षक उन्हें मैं जजूँ भाव सो।।मैं.।।१११।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य एकचत्वारिंशत्सहस्रअष्टशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादि चौबीस सौ साधु राजें वहाँ।
भव्य भी पूजते पाप नाशें यहाँ।।मैं.।।११२।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य चतुर्विंशतिशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

समवसरण में शांति के, ऋषिगण सर्वप्रधान।
सब बासठ सु हजार हैं, नमूँ नमूँ गुणखान।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य द्विषष्टिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१७)

–राग-टप्पा–

गुरुदेव! दया करिये, श्रीचरणों में रख लीजिये।।गुरु.।। टेक.।।
कुंथुनाथ जिन समवसरण में, महाव्रत गुणमणि भरिये।

केवलज्ञानी प्रभु बत्तिस सौ, घाति कर्म से रहिये।
गुण आनंत चतुष्टय सहिते, पूजत ही गुण भरिये।।११३।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य त्रयसहस्रद्विशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि तेतिस सौ सु पचास सर्व दुख हरिये।
तुम पद पंकज सेवत भविजन मुक्तिरमा को वरिये।।गुरु.।।११४।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य त्रयस्त्रिंशत्शतपंचाशत्विपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि मुनिवर पचीस सौ, नग्न रूप गुण भरिये।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, पूजत ही सुख भरिये।।गुरु.।।११५।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य पंचविंशतिशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वधारि मुनि सात शतक हैं, पूजत ही दुख हरिये।
गुरुदेव! दया करिये, श्री चरणों में रख लीजिये।।गुरु.।।११६।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य सप्तशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियधारी इक्यावन सौ, दश धर्मों से सहिये।
उनके चरण कमल को पूजत, रोग शोक दुख हरिये।।गुरु.।।११७।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य पंचसहस्रएकशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेतालीस हजार एक सौ, पचास शिक्षक कहिये।
उनके पद पंकज को पूजत, भव भव दुःख को दहिये।।गुरु.।।११८।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य त्रिचत्वारिंशत्सहस्रएकशतपंचाशत्शिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनिगण दो हजार हैं, उन पद पूजन करिये।
जन्म मरण के दुःख नाश कर, जिन आतम निधि भरिये।।गुरु.।।११९।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य द्विसहस्रवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

कुंथुनाथ के पास में, साठ हजार मुनीश।
अर्घ चढ़ाकर पूजहूँ, नमूँ नमाकर शीश।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य षष्टिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१८)

मिले समरस का झरना, गुरुदेव चरण को पूजते।मिले.।।टेक.।।
केवलज्ञानी अट्ठाइस सौ, घातिकर्म क्षय करना।
अव्याबाध सौख्य गुणपूरित, पूजत ही भव हरना।।मिले.।।१२०।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य अष्टाविंशतिशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि दोय हजार सु पचपन निजसुख भरना।
जो पूजें सो शिवकांता लें, वंदत ही दुख हरना।।मिले.।।१२१।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य द्विसहस्रपंचपंचाशत्विपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि मुनि अट्ठाइस सौ, सर्व जगत दुख हरना।
पूजत ही निज संपत् मिलती, चहुँगति भय परिहरना।।मिले.।।१२२।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य अष्टाविंशतिशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ के समवसरण में, मुनिगण हैं जग शरना।
पूर्वधारि छह सौ दस मानें, पूजत ही भव हरना।।मिले.।।१२३।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य दशोत्तरषट्शतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियधारी तेतालिस सौ, सर्व सौख्य अनुसरना।
जो पूजें सो निजपद पावें, पुनर्जनम नहिं धरना।।मिले.।।१२४।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य त्रिचत्वारिंशत्शतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतिस सहस आठ सौ पैंतिस, शिक्षक मुनि सुख भरना।
सुर नर किन्नर गुण को गाते, नित वंदत गुरु चरना।।मिले.।।१२५।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य पंचत्रिंशत्सहस्रअष्टशतपंचत्रिंशत्शिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनि सोलह सौ मानें, सात भयों के हरना।
मैं नित पूजूँ भक्ति भाव से, हो भवदधि से तरना।।मिले.।।१२६।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य एकसहस्रषट्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

अरहनाथ की सभा में, साधु पचास हजार।
नग्न दिगम्बर वे यती, करें जगत उद्धार।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथस्य पंचाशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(१९)

मुनिराज शरण लीजे, तुम पद पंकज पूजहूँ।मुनिराज.।।
केवलज्ञानी प्रभु बाइस सौ, उनमें जग दीपे।
चार चतुष्टय लक्ष्मी के वर पूजत सुख सीझे।।मुनि.।।१२७।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य द्विसहस्रद्विशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि सत्रह सौ पच्चास वहाँ दीखें।
सर्व मूलगुण उत्तर गुण के मूर्तिरूप दीखें।।मुनि.।।१२८।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य एकसहस्रसप्तशतपंचाशत्विपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि मुनि बाइस सौ हैं, मोह शत्रु जीतें।
पूजत वंदत पाप नशावो गुण कीर्तन कीजे।।मुनि.।।१२९।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य द्विसहस्रद्विशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के समवसरण में, मुनिगण बहु दीखें।
पूर्वधारि पण सौ पचास हैं, कर्म अरी जीतें।।मुनि.।।१३०।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य पंचशतपंचाशत्पूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियधारी मुनि उनतिस सौ समरस में भीजे।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति के स्वामी सुख कीजे।।मुनि.।।१३१।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य एकोनत्रिंशत्शतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनि उनतिस हजार हैं, निज सुखरस पीते।
जो भविजन उनको नित पूजें, उनके दुख छीजें।।मुनि.।।१३२।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य एकोनत्रिंशत्सहस्रशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनि चौदह सौ उनका नित वंदन कीजे।
नवनिधि सुख संपति संतति की नित वृद्धी कीजे।।मुनि.।।१३३।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य चतुर्दशशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

मल्लिनाथ जिनराज के, ऋषि चालीस हजार।
पूजूँ मनवचकाय से, शीघ्र लहूँ भवपार।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य चत्वारिंशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(२०)

हों मुझको सुखकारी, श्री नग्न दिगम्बर साधु जी।हों.।।टेक.।।
केवलज्ञानी प्रभु अठरह सौ, घाति करम हारी।
त्रिभुवन जन से पूजित भगवन्, भवदुख परिहारी।।हो.।।१३४।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य अष्टादशशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मुनि पंद्रह सौ हैं, त्रिभुवन मनहारी।
रोग शोक दुख संकट नाशें, पूजत सुखकारी।।हों.।।१३५।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य एकसहस्रपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञानि गुरु अठरह सौ हैं, निज गुण भंडारी।
क्षायिक समकित रत्न धरें वो, पूजें रुचिधारी।।हों.।।१३६।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य अष्टादशशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के समवसरण में मुनिपद के धारी।
पूर्वधारि गुरु पाँच शतक हैं, भव भव भयहारी।।हों.।।१३७।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य पंचशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियधारी मुनि बाइस सौ, सब जग हितकारी।
जो पूजें सो पाप नशावें, पावें शिवनारी।।हों.।।१३८।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य द्वाविंशतिशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं इक्किस हजार मुनि शिक्षक, सब जन मनहारी।
चंद्र किरणवत् वचन शांतिप्रद, शिक्षा सुखकारी।।हों.।।१३९।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य एकविंशतिसहस्रशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनि बारह सौ मानें, तीन रत्नधारी।
पूजत ही सब व्याधि दूर हों, त्रिभुवन हितकारी।।हों.।।१४०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य द्वादशशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

मुनिसुव्रत जिननाथ के, ऋषिगण तीस हजार।
मुनिव्रत मेरे पूर्ण हों, नमूँ नमूँ शत बार।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य त्रिंशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। **शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

(२१)

–चाल–हे दीनबंधु.....

ऋषि केवली सोलह शतक विराजते वहाँ।
संपूर्ण लोक ज्ञान में प्रतिबिम्बते वहाँ।।
मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आप को नमूँ।
संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूं।।१४१।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य षोडशशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर विपुलमती सु बारह सौ पचास हैं।
भव्यों के हृदय पंकज करते विकास हैं।।मैं.।।१४२।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य द्वादशशतपंचाशत्विपुलमतिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अवधिज्ञानी सोलह शतक वहाँ।
निज ज्ञान से संपूर्ण लोक लोकते तहाँ।।मैं.।।१४३।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य षोडशशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ के समवसरण में पूर्वधर मुनी।
मैं पूजहूं वे चार सौ पचास सुखमणी।।मैं.।।१४४।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य चतुःशतपंचाशत्पूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रिय धरें पंद्रह शतक मुनीश पूज्य हैं।
व्रतशील संयमादि से अतिशायि धन्य हैं।।मैं.।।१४५।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य पंचशशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह हजार छह सौ शिक्षक मुनी वहाँ।
उत्तम क्षमादि धर्म को फैलावते यहाँ।।मैं.।।१४६।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य द्वादशसहस्रषट्शतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनी हजार हैं सिद्धांत के ज्ञानी।
इन पूजहूँ बनूं सदा मैं भेद विज्ञानी।।
मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आप को नमूँ।
संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूं।।१४७।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य एकसहस्रवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

नमिनाथ की सभा में, ऋषिगण बीस हजार।
जिनगुण संपद हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।२१।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य विंशतिसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(२२)

मुनि केवली पंद्रह शतक विराजते वहाँ।
निज पर प्रकाश होएगा उन पूजते यहाँ।।मैं.।।१४८।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य एकसहस्रपंचशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर विपुलमती वहां नव सौ प्रमाण हैं।
उन चार ज्ञानधारि को मेरा प्रणाम है।।मैं.।।१४९।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य नवशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

मुनिराज अवधिज्ञानि एक सहस पाँच सौ।
जन पूजते संस्तव करे हैं भांति भांति सो।।मैं.।।१५०।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य एकसहस्रपंचशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ का समोसरण महान है।
मुनि पूर्वधर वहाँ पे चार सौ प्रमाण हैं।।मैं.।।१५१।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य चतुःशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विक्रिया सहित वहाँ ग्यारह शतक कहें।
उन पूजते संसार के दुख क्लेश ना रहे।।
मैं पुण्य हेतु पुण्य राशि आप को नमूँ।
संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूं।।१५२।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य एकादशशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनी ग्यारह हजार आठ सौ कहे।
जो वंदना करें उन्हों के पाप ना रहें।।मैं.।।१५३।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य एकादशसहस्रअष्टशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनीश आठ सौ स्वतत्त्व के वेत्ता।
उनको जजें सुरेश वृन्द भक्ति समेता।।मैं.।।१५४।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य अष्टशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

नेमिनाथ के पास में, अठरह सहस मुनीश।
जो नमते पद पद्म को, बनें भुवन के ईश।।२२।।

ॐ ह्रीं श्रीमिनाथस्य अष्टादशसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(२३)

मुनि केवली हजार वहाँ शोभ रहे हैं।
उन दर्श मात्र से असंख्य पाप बहे हैं।।
मैं पुण्य हेतु पुण्यराशि आपको नमूँ।
संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूं।।१५५।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य एकसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज विपुलमती ज्ञानि सात सौ पचास।
जो पूजते वे शीघ्र लहें ज्ञान का विकास।।
मैं पुण्य हेतु पुण्यराशि आपको नमूँ।
संपूर्ण सौख्य पाय, मृत्यु भीति को हनूं।।१५६।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य सप्तशतपंचाशत्विपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह शतक मुनीश अवधिज्ञान को धरें।
उन पूजते भवीक भेदज्ञान को धरें।।मैं.।।१५७।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य चतुर्दशशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ का समोसरण विशेष है।
मुनि तीन सौ पचास पूर्वधारि वेष हैं।।मैं.।।१५८।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य त्रयशतपंचाशत्पूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रिय धरें मुनीश एक ही हजार हैं।
वे सर्व रिद्धि सिद्धि भरें बार-बार हैं।।मैं.।।१५९।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य एकसहस्रविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनीश दश हजार नौ शतक कहे।
उन पूजते भवीक जगत अंत को लहें।।मैं.।।१६०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य दशसहस्रनवशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह सौ कहे वादी मुनीश वाद में कुशल।
उन पूजते संपूर्ण पाप का उदय विफल।।मैं.।।१६१।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य षट्शतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

पार्श्वनाथ के पास में, सोलह सहस मुनींद्र।
मैं पूजूँ नित भाव से, मिले शीघ्र पद इंद्र।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य षोडशसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

(२४)

कैवल्यज्ञान के धनी हैं सात सौ वहाँ।
घाती करम को घात अव्याबाध सुख लहा।।
सर्वार्थसिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूँ।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।१६२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः सप्तशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज विपुलमती ज्ञान धारते वहाँ।
वे पाँच सौ प्रमाण उन्हें पूजहूँ यहाँ।।सर्वार्थ.।।१६३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः पंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान अवधि धारते तेरह शतक मुनी।
उन पूजते हि पापकर्म निर्जरा घनी।।सर्वार्थ.।।१६४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः त्रयोदशशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वर्द्धमान का समोशरण अपूर्व है।
मुनिराज तीन सौ वहां पे ज्ञानी पूर्व हैं।।सर्वार्थ.।।१६५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः त्रयशतपूर्वऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रिय धरें नव सौ मुनी तप तेज से वहाँ।
जो पूजते संपूर्ण ज्ञान पावते यहाँ।।सर्वार्थ.।।१६६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः नवशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनी निन्यानवे शतक वहाँ रहें।
जिनके वचन पियूष से ही तृप्ति को लहें।।सर्वार्थ.।।१६७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः नवसहस्रनवशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनीश चार सौ जिनधर्म प्रकाशें।
जो उनके पाद को नमें वे स्वात्म प्रकाशें।।सर्वार्थ.।।१६८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः चतुःशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

महावीर प्रभु के ऋषी, चौदह सहस प्रमाण।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले सौख्य निर्वाण।।२४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः चतुर्दशसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

चौबिस जिनवर के समवसरण में ऋषिगण जो भी माने हैं।
वे सब अट्ठाइस लाख अष्ट चालीस हजार बखाने हैं।।
वे सब अर्हन्मुद्राधारी, कामारि शत्रु के जेता हैं।।
मैं इनको प्रणमूँ बार बार, ये परमानंद के भोक्ता हैं।।२५।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितअष्टाविंशतिलक्षअष्ट-चत्वारिंशत्सहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र—१. ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुभ्यो नमः।

२. ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरसमवसरणस्थितसर्वसाधुभ्यो नमः।

(दोनों में से कोई एक मंत्र की १०८ बार लवंग या सुगंधित पुष्पों से जाप्य करना)।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

जय जय सब ऋषिगण, भूषित गुणमणि, मूलोत्तर गुण पूर्ण भरें।
जय नग्न दिगम्बर, मुक्ति वधूवर, सुरपति नरपति चरण परें।।
मैं पूजूँ तुमको, नित सुमती दो, पाप पुंज अंधेर टले।
होवे सब साता, मिटे असाता, पुण्य राशि हो ढेर भले।।१।।

–नाराच छंद–

नमूँ नमूँ मुनीश! आप पाद पद्म भक्ति से।
भवीक वृंद आप ध्याय कर्म पंक धोवते।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।२।।

अठाइसों हि मूलगुण धरें दया निधान हैं।
अठारहों सहस्र शील धारते महान हैं।।अनाथ.।।३।।

चुरासि लाख उत्तरी गुणों कि आप खान हैं।
समस्त योग साधते अनेक रिद्धिमान हैं।।अनाथ.।।४।।

समस्त अंगपूर्व ज्ञान सिंधु में नहावते।
निजात्म सौख्य अमृतैक पूर स्वाद पावते।।अनाथ.।।५।।

अनेक विध तपश्चरण करो न खेद है तुम्हें।
अनंत ज्ञानदर्श वीर्य प्राप्ति कामना तुम्हें।।अनाथ.।।६।।

सु तीन रत्न से महान आप रत्न खान हैं।
अनेक रिद्धि सिद्धि से सनाथ पुण्यवान हैं।।अनाथ.।।७।।

परीषहादि आप से डरें न पास आवते।
तुम्हीं समर्थ काम मोह मृत्यु मल्ल मारते।।अनाथ.।।८।।

बिहार हो जहाँ जहाँ सु आप तिष्ठते जहाँ।
सुभिक्ष क्षेम हो सदैव ईति भीति ना वहाँ।। अनाथ.।।९।।

सुधन्य धन्य पुण्यभूमि आपसे हि तीर्थ हो।
सुरेंद्र चक्रवर्ति वंद्य भूमि भी पवित्र हो।।अनाथ.।।१०।।

जयो जयो मुनीश! आप भक्ति मोह को हरे।
जयो मुनीश! आप भक्त आत्मशक्ति को धरें।।अनाथ.।।११।।

अपूर्व मोक्षमार्ग युक्ति पाय मुक्ति को वरें।
पुनर्भवों से छूट के सु पंचमी गती धरें।।अनाथ.।।१२।।

मुनीश! आप पास आय स्वात्म तत्त्व पा लिया।
समस्त कर्म शून्य ज्ञान पुंज आत्म जानिया।।अनाथ.।।१३।।

–दोहा–

छट्ठे गुणस्थान से, चौदहवें तक मान्य।
नमूँ महर्षि सर्व को, मिले 'ज्ञानमति' साम्य।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितप्रमत्तादिअयोगिगुणस्थान-पर्यंतसर्वमहर्षिभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

तीर्थंकर प्रभु के समवसरण के, महर्षिगण को वंदन है।
उनकी भक्ती मंगलकारी, वे जिनवर के लघुनंदन हैं।।
जो श्रीमहर्षिविधान को, गुरुवर भक्ती से करते हैं।
''सज्ज्ञानमती'' रत्नत्रय निधि, ले शीघ्र भवोदधि तिरते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–नरेन्द्र छंद–

चौबीस तीर्थंकर को प्रणमूं, महावीर को वंदूं।
गौतम गणधर को नित प्रणमूं, समवसरण को वंदूं।।
जिनशासन में मूलसंघ में, कुंदकुंद गुरु मानें।
गच्छ सरस्वति विश्वप्रथित में, बलात्कारगण जानें।।1।।

शांतिसागराचार्य प्रथम गुरु उस ही परंपरा में।
उनके पट्टाचार्य वीरसागर गुरु मान्य जगत में।।
ऐसे सूरि वीरसागर गुरु चरणकमल में आके।
'ज्ञानमती' हो गई तभी से, आर्यिकाव्रत को पाके।।2।।

सरस्वती की कृपा प्राप्त कर अल्पज्ञान पाया है।
अष्टसहस्री आदी ग्रंथों, का अनुवाद किया है।।
षट्खण्डागम ग्रंथों पर, की संस्कृत टीका रचना।
देव शास्त्र गुरुओं की भक्ती, उनकी ही यह महिमा।।3।।

अनुपम श्रेष्ठ 'इन्द्रध्वज' आदिक, प्रथित विधान रचे हैं।
प्रभु की अमित भक्ति ही उसमें, कारण मात्र दिखे है।।
पंच परमगुरु पदपंकज की, भक्ति असीम हृदय में।
उनके लेश गुणों की पूजा, गुण का करे उदय में।।4।।

हस्तिनागपुर क्षेत्र पूण्य भू, सुर नर मुनिगण अभिनुत।
श्री महर्षि विधान अनुपम, रचना की है अद्भुत।।
जब तक जिनशासन है जग में, संघ चतुर्विध होवे।
तब तक यह विधान भव्यों को, रत्नत्रय निधि देवे।।5।।

–दोहा–

गणिनी ज्ञानमती रचित, यह विधान सुखकार।
ज्ञानमती केवल करे, भरे सौख्य भंडार।।6।।

समवसरण की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

चौबिस जिनवर के, समवसरण की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।टेक.।।

समवसरण के बीच प्रभूजी नासादृष्टि विराजें।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभू जी....
ओंकार ध्वनी, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

चार दिशा के मानस्तभों को भी मेरा वंदन।
मिथ्यादृष्टी जिनको लखकर, पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभू जी.....
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रचार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएँ।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएँ।। प्रभू जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिंब विराजें।
द्वादशगणयुत श्रीमण्डप में, सम्यग्दृष्टी राजें।।प्रभू जी.....
अगणित वैभवयुत, बाह्य विभव से, शोभ रहे भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना', भव आरत टरते हैं।। प्रभू जी.....
प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक, महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

श्री महर्षि विधान की आरती

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

श्री महर्षि मण्डल विधान की आरति है हितकारी।
भव आरत से सदा छुड़ाती, मोह तिमिर परिहारी।।
बोलो महर्षिगण की जय–4।। टेक.।।
जैनागम में पांच पूज्य, परमेष्ठी माने जाते।
अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु कहलाते।।
चार पदों की प्राप्ती हेतू.....
चार पदों की प्राप्ती हेतू, साधु बनें नर–नारी।।भव.।।1।।
तीर्थंकर के समवसरण में सात भेद माने हैं।
अवधिज्ञानि, केवली, विपुलमति, पूर्वधरा जाने हैं।।
विक्रियधारी, शिक्षक, वादी .....
विक्रियधारी, शिक्षक, वादी, की भक्ती सुखकारी।।भव.।।2।।
इनके महागुणों का वर्णन, शास्त्र पुराण बताते।
इनकी भक्ती, वन्दन से, भव–भव के अघ धुल जाते।।
सुरनर वंदित पूज्य गुरू को.....
सुर नर वंदित पूज्य गुरू को, नितप्रति धोक हमारी।।भव.।।3।।
गणिनी माता ज्ञानमती, इक युग की अमिट धरोहर।
जिनसंस्कृति की रक्षा में हैं, सदा सर्वदा तत्पर।।
शारद माँ की प्रतिकृति का.....
शारद मां की प्रतिकृति का, वंदन आतम हितकारी।।भव.।।4।।
लिखे त्रय शतक ग्रंथ उन्हीं में, यह अनमोल कृती है।
समवसरण का वर्णन करती, मनवांछित देती है।।
सच्चा समवसरण पा 'इन्दू'.....
सच्चा समवसरण पा 'इन्दू', वरूं मुक्तिसखि प्यारी।।भव.।।5।।
बोलो महर्षिगण की जय–4।। टेक.।।

समवसरण का भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में 'चन्दना' देखो प्रभू की गंधकुटि भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।

समवसरण का भजन

तर्ज–तुम तो ठहरे परदेशी.....

समवसरण दर्शन करो, तो भव्य कहलाओगे।
यदि तुम अभव्य हुए तो दर्श नहीं पाओगे।। टेक.।।
प्रभुजी की धर्म सभा, में जो भी आता है।
तुम भी दिव्यध्वनि को सुनो, तो भव से तिर जाओगे।। समवसरण.....।।1।।

गूँगे भी वहाँ जाकर, बोलने लग जाते हैं।
तुम भी आज श्रद्धा करो, तो आत्मसुख पाओगे।। समवसरण.....।।2।।

इन्द्रभूति गौतम का भी, मान गलित हुआ था जहाँ।
देखो वही मानस्तम्भ, मुक्तिपथ पाओगे।। समवसरण.....।।3।।

दर्शनों के भावों से, मेढक ने देवगती ली।
दर्शन करो तुम भी तो, देवगति पाओगे।। समवसरण.....।।4।।

तुम भव्य हो या अभव्य, इसका परीक्षण करो।
दर्शन से भव्यत्व की, श्रेणी में आओगे।। समवसरण.....।।5।।

भजन

तर्ज–बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
संगम के तट पर प्रभु का, तीरथ बना है पहली बार।। टेक.।।

इस धरती के पहले राजा, ऋषभदेव कहलाए।
हम सबको जीवन जीने के, सूत्र उन्होंने बताए।।
असि मसि आदि क्रिया बताकर, किया जगत उद्धार।
संगम के तट पर प्रभु का, तीरथ बना है पहली बार।।1।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, युग के आदि विधाता।
जा प्रयाग में दीक्षा धारी, वृषभेश्वर जगत्राता।।
उसी तीर्थ पर बहे 'चंदना', नदी त्रिवेणी धार।
संगम के तट पर प्रभु का, महाकुंभ उत्सव पहली बार।।2।।

तपस्थली पर देखो सुन्दर, ऋषभदेव की प्रतिमा।
समवसरण कैलाशगिरी, वटवृक्ष की अद्भुत महिमा।।
ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा हुई साकार।
संगम के तट पर प्रभु का, महाकुंभ उत्सव पहली बार।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–धीरे-धीरे बोल.....

ज्ञानमती माताजी की वाणी सुन लो।।
वाणी सुन लो, जिनवाणी सुन लो।।
जनवाणी भव भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।टेक.।।

ज्ञान के मोती का हैं ये भण्डार
ज्ञान की ज्योती इनमें भरी अपार।
वीरसिंधु से दीक्षा ली स्वीकार,
पुनः ज्ञानमति नाम किया साकार।।
मुझे ज्ञान दो, विज्ञान दो,
जनवाणी भव-भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।1।।

जग में है अंधियारी काली रात,
उसमें दे आलोक तुम्हारी बात।
स्वारथ के सब बंधु भ्रात औ तात,
कैसे छोड़ूँ मोह बताओ मात।।
मुझे ज्ञान दो, विज्ञान दो,
जनवाणी भव-भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।2।।

आतम तत्त्व बताना इनका काम,
हम माने तो पाएँगे निजधाम।
सार्थक हो ''चन्दना'' हमारा नाम,
मिल जावे जब अपना आतमराम।।
मुझे ज्ञान दो, विज्ञान दो,
जनवाणी भव-भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।3।।